DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

भाषा विज्ञान प्रश्नोत्तरी

LIVE 03-05-2024 05:00 PM

भाषा का उद्भव एवं विकास → सिद्धांत

भाषा :- ध्वनि पद वाक्य अर्थ

↓ ↓ ↓ ↓

ध्वनि विज्ञान | पद विज्ञान × | वाक्य विज्ञान × | अर्थ विज्ञान

भाषाओं का वर्गीकरण - आकृतिमूलक

1. भाषावैज्ञानिकैः भाषाः कतिधा वर्गीकृताः?

(A) चतुर्धा

(B) त्रिधा

(C) द्विधा

(D) पञ्चधा

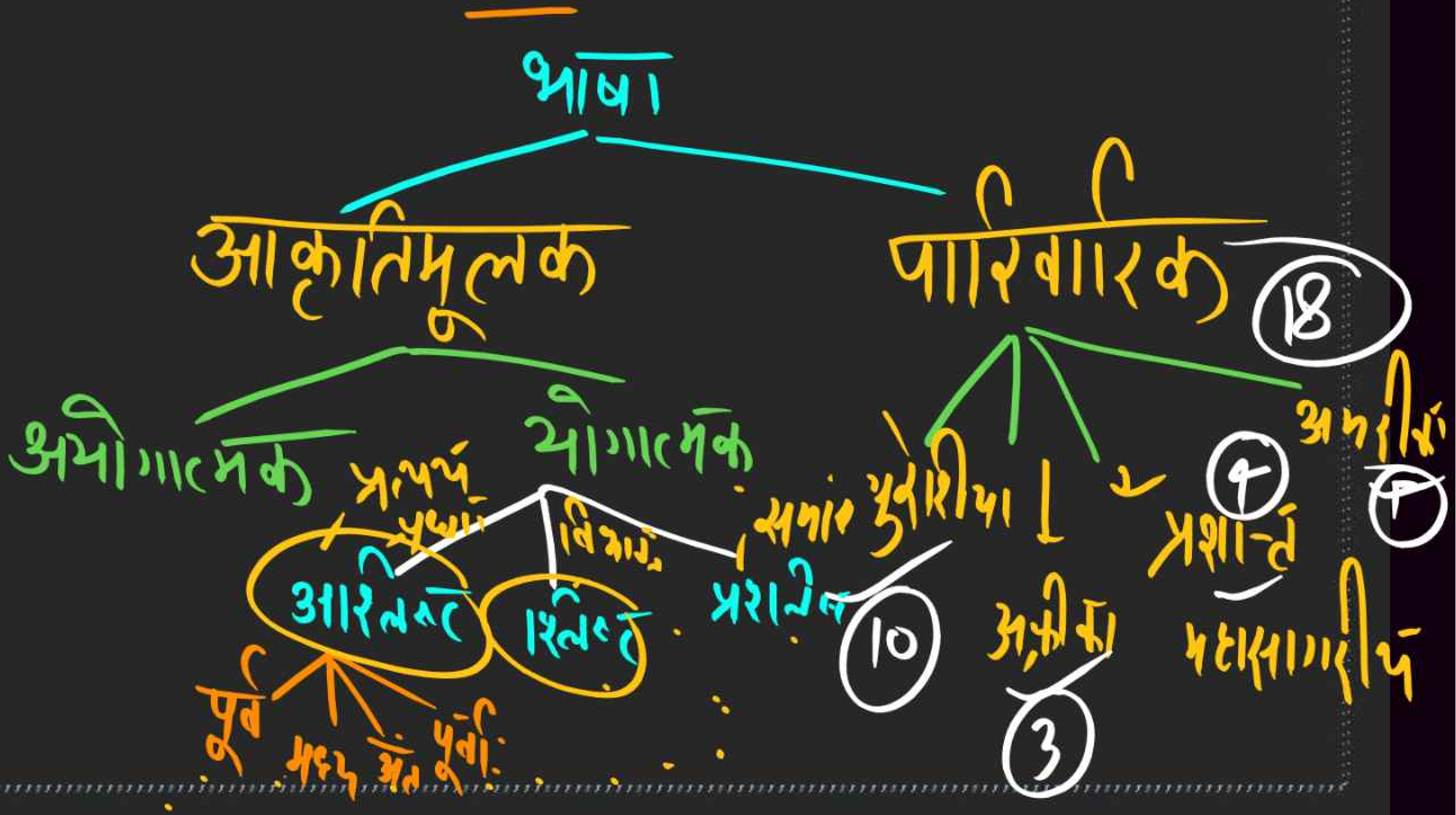

व्याख्या- भाषा- भाषा भावाभिव्यक्ति और विचार विनिमयका सांकेतिक साधन है, संसार में तीन हजार से ज्यादा भाषायें बोली जाती हैं, जिनका स्वरूप, वर्ण, लिपि, शैली, एक दूसरे से सर्वथा भिन्न है, इसीलिए भाषावैज्ञानिकों ने इनको एक स्थान पर लाकर रख दिया जहाँ से पृथक् पृथक् स्वरूप और स्थान तथा देश के हिसाब से उनका वर्गीकरण किया जाता है।

भाषाओं का भाषा वैज्ञानिकों ने द्विधा वर्गीकरण किया है-

1. आकृतिमूलक वर्गीकरण
2. पारिवारिक वर्गीकरण

इनके आधार पर ही आकृतिमूलक से अयोगात्मक, योगात्मक श्लिष्टादि भेद होते हैं।तथा पारिवारिक से भारोपीय, यूरेशिया सामी-हामी इत्यादि।

2. आकृतिमूलकवर्गीकरणमाश्रित्य अधस्तनासु का भाषा योगात्मकभाषासु नास्ति ?

(A) अरबी

योगात्मक, श्लिष्ट, अंतर्मुखी, संयोगात्मक

(B) संस्कृतम्

योगात्मक, श्लिष्ट, बहिर्मुखी, संयोगात्मक

(C) चीनी

(D) तुर्की

योगात्मक, अश्लिष्ट, अंतयोगात्मक

व्याख्या- भाषाओं का दो प्रकार का वर्गीकरण है-

(1) आकृतिमूलक

(2) पारिवारिक

अयोगात्मक और योगात्मक, आकृतिमूलक के दो मुख्य भेद हैं।

अरबी भाषा- श्लिष्ट योगात्मक भेद के अंतर्मुखी उपभेद की प्रमुख भाषा है।

संस्कृतम्- ये श्लिष्ट योगात्मक भेद के बहिर्मुखी उपभेद की प्रमुख भाषा है।

चीनी (मण्डारिन)- यह भाषा अयोगात्मक वर्ग की प्रमुख भाषा है।

तुर्की - अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं की तुर्की प्रमुख भाषा है।

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि सभी भाषायें योगात्मक वर्ग की हैं तथा चीनी भाषा 'अयोगात्मक वर्ग' की है।

4. भाषाणां सतम् वर्गे स्वीक्रियते-

(A) लैटिन

(B) ग्रीक

(C) संस्कृतम्

(D) फ्रेन्च

7. अधोलिखितेषु अर्थविस्तारस्योदाहरणं नास्ति-

(A) गवेषणा

(B) तैलम्

(C) प्रवीणः

(D) श्राद्धः

व्याख्या- अर्थविकास या अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ संसार की सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं। भाषा भी परिवर्तनशील है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है. उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। यह अर्थपरिवर्तन तीन प्रकार का होता है-

1. कहीं पर अर्थ का विस्तार होता है।

2. कहीं पर अर्थ का संकोच होता है।

3. कहीं पर पुराने अर्थ के स्थान पर नया अर्थ आ जाता है।

(i) अर्थविस्तार

(ii) अर्थसंकोच

(iii) अर्थादेश

(iv) अर्थोत्कर्ष

(vi) अर्थापकर्ष

⇒ अर्थविस्तार-

कुछ शब्द मूलरूप में किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे।

कुशल- कुशल शब्द का अर्थ था- कुशान् लाति (कुशों को लाना या लेना) कुश का अग्रभाग तीक्ष्ण होता है, जिससे हाथ में कटने का भय रहता था, अतः कुश लाना चतुरता का सूचक था। यह शब्द धीरे-धीरे कुश लाना अर्थ को छोड़कर चतुरता, निपुणता अर्थ देने लगा।

अन्य उदाहरण- प्रवीण, तैल, गवेषणा, महाराज, गोशाला आदि।

⇒ **अर्थसंकोच -** अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हुआ है। यास्क ने निरुक्त में वस्तुओं के नामकरण पर विचार करते हुए- गो, अश्व. पृथ्वी आदि का उदाहरण देकर बताया है कि इनका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ बहुत विस्तृत है, परन्तु ये किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो गए हैं। 'गच्छतीति गौः' चलने वाले को गो (गाय) कहते हैं। वारिज अम्बुज, सरसिज, सरोज, पंकज, नीरज इनका शाब्दिक अर्थ है- जल, तालाब या कीचड़ा में होने वाला, परन्तु ये शब्द कमल अर्थ में रूढ़ हो गए हैं।

अन्य उदाहरण- जलद, तोयद, अम्बुद, वारिवाह (बादल), वारिधि, नीरधि, अम्बुधि, तोयधि (समुद्र), सर्प, पर्वन, मृग, सभ्य, श्राद्ध, वेदना, घृणा, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, विशेषण, नामकरण आदि।

⇒ **अर्थादेश-** अर्थादेश का अर्थ है- एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है- एक को हटाकर दूसरे को आना। अर्थादेश में शब्द का प्राचीन अर्थ लुप्त हो जाता है और नया अर्थ आ जाता है।

असुर- मूल अर्थ 'असुर' प्राणशक्तिसम्पन्न 'देवता' था। बाद में सुर (देवता) का उल्टा असुर राक्षस अर्थ हो गया।

वर- मूल अर्थ श्रेष्ठ था और अब केवल दूल्हा अर्थ रह गया है।

सह- वेद में सह धातु का अर्थ जीतना था। अब सहन करना अर्थ रह गया है।

मौन- मूल अर्थ मुनि कर्म या मुनियों का आचरण था। अब चुप रहना अर्थ रह गया।

अन्य उदाहरण- देवानां प्रियः, बौद्ध बुद्ध, पाषण्ड, आकाशवाणी, साहस, खाद्य-खाद, भद्र-भद्दा, मुग्ध, वाटिका-बाड़ी, कर्पट- कपड़ा आदि।

अर्थोत्कर्ष - अर्थ की दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होता है कि अर्थ विकास की जो तीन दिशाएँ बताई गई हैं- उनमें कुछ में शब्दों में अर्थपरिवर्तन से अर्थ में उत्कर्ष आया है और कुछ में अर्थ में अपकर्ष (निकृष्टता)।

उदाहरण- मुग्ध, साहस-साहसी, गोष्ठ-गोष्ठी, सभ्य।

⇒ अर्थापकर्ष- इसी प्रकार अर्थपरिवर्तन से कुछ शब्दों के अर्थों में अपकर्ष (हीनता, निकृष्टता) आया है। असुर ऋग्वेद में देव वाचक था, संस्कृत में राक्षस हो गया।

जुगुप्सा- पालन करना, छिपाना अर्थ था, अब घृणा अर्थ रह गया।

8. आकृतिमूलकवर्गीकरणे हिन्दीभाषा मन्यते-

(A) प्रश्लिष्ट बहिर्मुखी

(B) श्लिष्ट बहिर्मुखी वियोगात्मिका

(C) श्लिष्ट बहिर्मुखी संयोगात्मिका

(D) श्लिष्टान्त वियोगात्मिका

योगात्मक, श्लिष्ट, बहिर्मुखी, वियोगात्मक

10. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?
समुचितां तालिकां चिनुत -

(a) अयोगात्मकभाषा	(i) संस्कृत भाषा
(b) श्लिष्टयोगात्मकभाषा	(ii) तुर्की
(c) प्रश्लिष्टयोगात्मकभाषा	(iii) तिब्बती भाषा
(d) अश्लिष्टयोगात्मकभाषा	(iv) चेरोफी

Options

(A) (a) (iv), (b) (iii), (c) (ii), (d) (i)

(B) (a) (ii), (b) (i), (c) (iv), (d) (iii)

(C) (a) (i), (b) (ii), (c) (iii), (d) (iv)

(D) (a) (iii), (b) (i), (c) (iv), (d) (ii)

व्याख्या- विश्व की भाषाओं के दो प्रकार के वर्गीकरण हैं- आकृतिमूलक और पारिवारिक। आकृतिमूलक वर्गीकरण के दो भेद हैं- योगात्मक और अयोगात्मक। अयोगात्मक भेद एक ही प्रकार का है। योगात्मक के तीन भेद हैं- 1. श्लिष्ट, 2. अश्लिष्ट, 3. प्रश्लिष्ट। योगात्मक भाषाएँ प्रकृति और प्रत्यय के संयोग से बनी हुई होती हैं।

आकृतिकमूलक वर्गीकरण-

1. **अयोगात्मक भाषाएँ -** अयोगात्मक उन भाषाओं को कहते हैं, जिनमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्धत्तत्त्व का संयोग नहीं होता है। प्रत्येक शब्द स्वतंत्र होता है। इसमें प्रत्येक शब्द प्रकृति या मूल के तुल्य होता है, अतः

इसे Root (धातु, मूल) Language कहते हैं। इन भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय जैसी चीज नहीं होती। इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाली भाषाएँ हैं- चीनी, तिब्बती आदि।

2. योगात्मक भाषाएँ- योगात्मक भाषाएँ उनको कहते हैं. जिनमें प्रकृति और प्रत्यय का संयोग रहता है। प्रकृति (अर्थतत्त्व) और प्रत्यय (सम्बन्धतत्त्व) का संयोग विभिन्न प्रकार से हो सकता है, अतः योगात्मक भाषाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है-

(1) अश्लिष्ट (2) श्लिष्ट (3) प्रश्लिष्ट

(क) अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ- अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय इस प्रकार जुड़ा हुआ होता है कि दोनों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसके चार भाग किये गये हैं- (1) पूर्वयोगात्मक (2) मध्ययोगात्मक (3) अन्तयोगात्मक (4) पूर्वान्तयोगात्मक इस वर्ग की भाषाओं में- 'काफिर, सन्थाली, तुर्की, मफोर' आदि प्रमुख हैं।

(ख) श्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ- श्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय घनिष्ठता से मिले होते हैं। दोनों इस प्रकार मिले होते हैं कि प्रकृति और प्रत्यय को अलग-अलग बताना संभव नहीं होता है। इसके दो भाग किये गये हैं और दोनों के पुनः दो- दो भाग हैं-

(1) अन्तर्मुखी श्लिष्ट अन्तर्मुखी श्लिष्ट के दो भेद-

(क) संयोगात्मक अन्तर्मुखी :- अरबी

(ख) वियोगात्मक अन्तर्मुखी :- हिब्रू

(2) बहिर्मुखी श्लिष्ट- बहिर्मुखी श्लिष्ट के दो भेद -

(क) संयोगात्मक बहिर्मुखी :- संस्कृत

(ख) वियोगात्मक बहिर्मुखी। :- हिन्दी

इस वर्ग की प्रमुख भाषाओं में हैं- अरबी, हिब्रू, संस्कृत तथा हिन्दी।

(ग) प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ- प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय इतने अधिक घनिष्ठ रूप से मिले होते हैं कि दोनों को न अलग पहचाना जा सकता है और न दोनों को एक- दूसरे से अलग किया जा सकता है। इसके दो भेद किये गये-

(1) पूर्ण प्रश्लिष्ट योगात्मक उ॰ चेरोकी

(2) आंशिक प्रश्लिष्ट योगात्मक। उ॰ बास्क

इस वर्ग की भाषाएँ हैं- चेरोकी, बास्क

12. 'समीकरणम्' कस्य दिशा वर्तते ?

(A) ध्वनिपरिवर्तनस्य

(B) रूपपरिवर्तनस्य

(C) अर्थपरिवर्तनस्य

(D) वाक्यपरिवर्तनस्य

व्याख्या- ध्वनिपरिवर्तन - परिवर्तन सृष्टि का नियम है। विश्व की प्रत्येक वस्तु में निरंतर परिवर्तन होता रहा है, हो रहा है और होता रहेगा। भाषा का प्रमुख तत्त्व ध्वनि है। वक्ता की ध्वनि पर दो प्रकार का प्रभाव पड़ता है- 1. आभ्यंतर 2. बाह्य। वक्ता और श्रोता से सम्बद्ध कारणों को आभ्यंतर कारण कहते हैं- जैसे- प्रयत्नलाघव, मुख-सुख, अज्ञान, शीघ्रभाषण आदि। इसके अतिरिक्त अन्य कारणों को बाह्यकारण कहते हैं। ये कारण बाहर से ध्वनि को प्रभावित करते हैं। जैसे सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक आदि कारण।

ध्वनिपरिवर्तन की दिशाएँ - ध्वनि परिवर्तनों का मुख्य कारण प्रयत्नलाघव या मुख सुख है।

1. समीकरण- जब दो विषम ध्वनियाँ एकत्र होती हैं तो एक ध्वनि दूसरी को प्रभावित करके अपने सदृश बना लेती है। यह समीकरण दो प्रकार का होता है

(क) पुरोगामी समीकरण

(ख) पश्चगामी समीकरण।

2. आगम उच्चारण की सुविधा के लिए शब्दों के आदि, मध्य या अन्त में कुछ ध्वनियाँ जोड दी जाती हैं, इन्हें आगम कहते हैं।

3. विषमीकरण यह समीकरण का उल्टा है। इसमें दो समध्वनियों में से एक ध्वनि विषम रूप से धारण करती है।

4. लोप- कभी-कभी मुखसुख, प्रयत्नलाघव या उच्चारण में शीघ्रता स्वराघात आदि के कारण कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है।

5. समाक्षरनोप- जहाँ पर दो समान ध्वनियाँ एक के बाद दूसरी आती है वहाँ एक का लोप कर दिया जाता है।

6. वर्णविपर्यय

7. महाप्राणीकरण

8. अल्पप्राणीकरण

9. घोषीकरण

10. अघोषीकरण

11. अनुनासिकीकरण
12. ऊष्मीकरण
13. सन्धिकार्य
14. मात्राभेद ।

2. रूपपरिवर्तन की दिशाएँ- रूपपरिवर्तन सामान्यतः दो दिशाओ में होता है- (i) सरलीकरण हेतु समरूपता (ii) संदेह निवारणार्थ नए रूपों की उत्पत्ति। संक्षेप में रूपपरिवर्तन के निम्नलिखित कारण हैं- (क) सरलीकरण (ख) नवीनता की अभिरुचि (ग) सादृश्य (घ) अज्ञता (च) बल।

3. अर्थपरिवर्तन जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। यह अर्थ परिवर्तन तीन प्रकार का होता है-

(i) कहीं पर अर्थ का विस्तार होता है।

(ii) कहीं पर अर्थ में संकोच होता है।

(iii) कहीं पर पुराने अर्थ के स्थान पर नया अर्थ आ जाता है। इन्हें ये नाम दिये गये हैं- (क) अर्थविस्तार (ख) अर्थसंकोच (ग) अर्थादेश।

4. वाक्यपरिवर्तन - विकास क्रम के अनुसार विश्व की प्रत्येक भाषा में परिवर्तन होते हैं। भाषा में परिवर्तन के कारण वाक्यों के पठन और प्रयोग में भी परिवर्तन होता है। वाक्यपरिवर्तन की प्रमुख दिशाएँ ये हैं- (क) पदक्रम में परिवर्तन (ख) अन्वय में परिवर्तन (ग) अधिक पद प्रयोग (घ) पद या प्रत्यय का लोप (च) कोष्ठ और डैश का प्रयोग (छ) आदरार्थक बहुवचन (ज) प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कथन (झ) कारक के लिए अर्धविराम।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समीकरण ध्वनिपरिवर्तन की दिशा में होता है। अतः विकल्प A सही है।